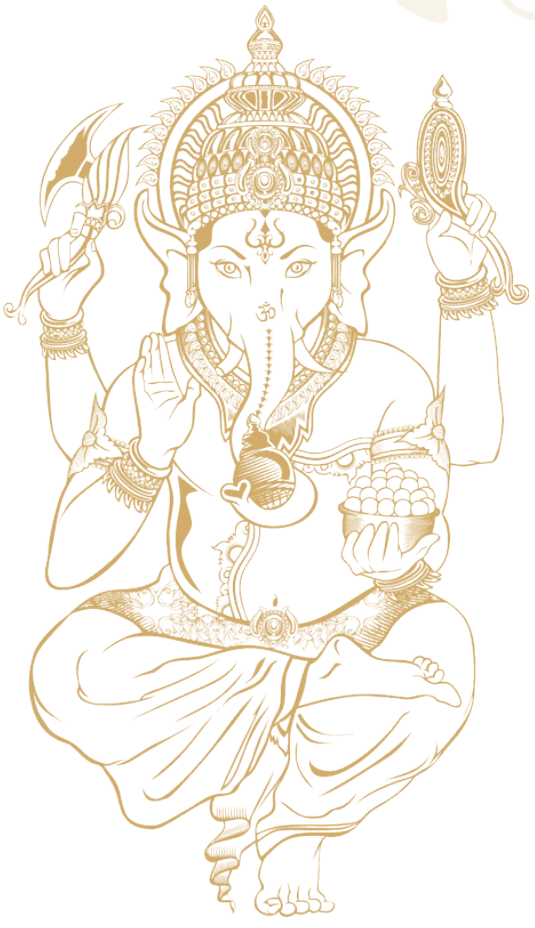

Mr. Rahul Sharma

Nikita

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120697907

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/08/1987	जन्म तिथि	12/05/1999
शुक्रवार	दिन	बुधवार
घंटे 17:05:00	जन्म समय	15:25:00 घंटे
घटी 28:21:31	जन्म समय(घटी)	24:44:16 घटी
India	देश	India
Una	स्थान	Una
31:28:00 उत्तर	अक्षांश	31:28:00 उत्तर
76:19:00 पूर्व	रेखांश	76:19:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:24:44	स्थानिक संस्कार	-00:24:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:44:23	सूर्योदय	05:31:17
19:16:11	सूर्यास्त	19:11:21
23:41:02	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:40

विंशोत्तरी शुक्र 5वर्ष 6मा 0दि राहु		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी शनि 3वर्ष 10मा 14दि केतु	
06/02/2016		15:52:15	धनु	लग्न	कन्या	10:17:13	26/03/2020	
06/02/2034		20:45:41	कर्क	सूर्य	मेष	27:23:55	27/03/2027	
राहु	19/10/2018	22:59:57	धनु	चंद्र	मीन	13:56:54	केतु	22/08/2020
गुरु	14/03/2021	26:33:33	कर्क	मंगल व	तुला	04:03:36	शुक्र	23/10/2021
शनि	19/01/2024	07:25:34	कर्क	बुध	मेष	12:36:21	सूर्य	27/02/2022
बुध	07/08/2026	16:25:01	कर्क	शुक्र	मिथु	10:17:39	चन्द्र	28/09/2022
केतु	26/08/2027	20:57:48	वृश्चि व	शनि	मेष	14:48:37	मंगल	25/02/2023
शुक्र	26/08/2030	09:49:06	मीन व	राहु व	कर्क	23:25:42	राहु	14/03/2024
सूर्य	20/07/2031	09:49:06	कन्या व	केतु व	मक	23:25:42	गुरु	18/02/2025
चन्द्र	18/01/2033	29:17:41	वृश्चि व	हर्ष	मक	22:54:41	शनि	30/03/2026
मंगल	06/02/2034	11:58:14	धनु व	नेप व	मक	10:30:57	बुध	27/03/2027
		13:34:56	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	15:46:54		

लग्न-चलित

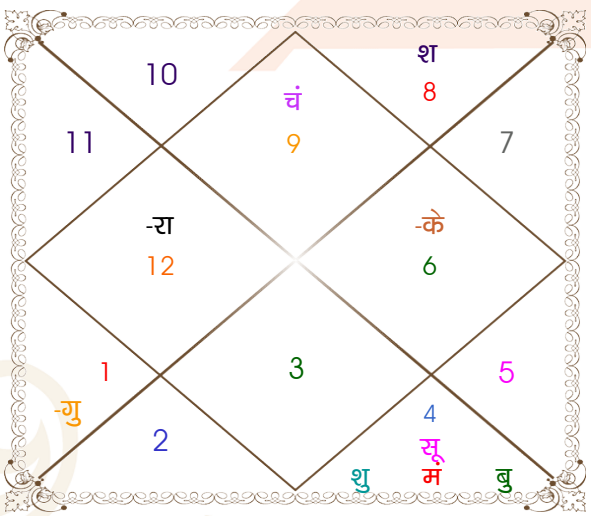

लग्न-चलित

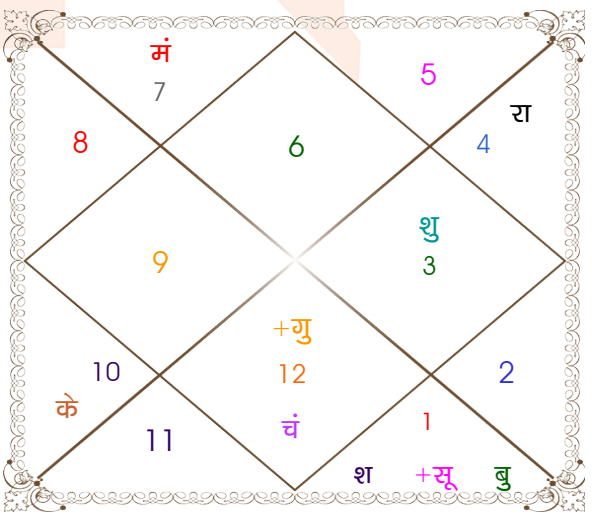

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	गौ	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	22.50		

डतण् तैनसौंतउं का वर्ग मूषक है तथा छपापजं का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण् तैनसौंतउं और छपापजं का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण् तैनसौंतउं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण् तैनसौंतउं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

छपापजं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि छपापजं कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।

त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु छपापजं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण् तैनसौंतउं तथा छपापजं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।